



जल जीवन मिशन

सन्दर्भ: जल जीवन मिशन (JJM) 130 मिलियन ग्रामीण घरों में नल-जल कनेक्शन पहुंचाकर सरकार के एक अतुलनीय प्रयास के रूप में उभरा है।

उपलब्धियाँ:

- **तीव्र विस्तार:** जल जीवन मिशन ने ग्रामीण नल कनेक्शन कवरेज में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जो अगस्त 2019 में 3.23 करोड़ घरों से बढ़कर केवल चार वर्षों में 13 करोड़ घरों तक पहुंच गया है।
- **घोषणा:** इस मिशन की घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त, 2019 को भारत के 73वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान की थी।
- **100% कवरेज:** छह राज्यों (गोवा, तेलंगाना, हरियाणा, गुजरात, पंजाब, हिमाचल प्रदेश) और तीन केंद्र शासित प्रदेशों (पुडुचेरी, दमन और दीव, दादरा और नगर हवेली, और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) ने 100% कवरेज हासिल कर लिया है। बिहार और मिजोरम भी क्रमशः 96.39% और 92.12% कवरेज के साथ अपने लक्ष्य के करीब हैं।
- **हर घर जल प्रमाणन:** कई राज्य और केंद्रशासित प्रदेश 'हर घर जल प्रमाणित' हैं, जिसका अर्थ है कि उन्होंने पुष्टि की है कि गांव के सभी घरों और सार्वजनिक संस्थानों को पर्याप्त, सुरक्षित और नियमित जलापूर्ति मिलती है।
- **राष्ट्रव्यापी प्रभाव:** देश भर के 145 जिलों और 1,86,818 गांवों ने 100% कवरेज प्राप्त की है।
- **दैनिक प्रगति:** 1 जनवरी, 2023 से प्रतिदिन औसतन 87,500 नल-जल कनेक्शन स्थापित किए गए हैं, इस अवधि के दौरान 61.05 लाख कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन (एफएचटीसी) स्थापित करके उत्तर प्रदेश अग्रणी राज्य है।
- **शिक्षा एवं स्वास्थ्य:** नल जल की आपूर्ति 88.73% स्कूलों और 84.69% स्कूलों तक बढ़ा दी गई है। आंगनवाड़ी केंद्र भी देश में शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं।
- **आकांक्षी जिले:** 112 आकांक्षी जिलों में नल के पानी की पहुंच 7.86% से बढ़कर 66.48% हो गई है, जिससे निवास की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

सामाजिक-आर्थिक लाभ

- **अल्पकालिक:** नियमित नल जल आपूर्ति से महिलाओं और युवा लड़कियों पर पारिवारिक दबाव कम हो जाता है, जिन्हें अब उन्हें भारी पानी का बोझ नहीं उठाना पड़ता है। परिणामतः उनके पास आय-सृजन गतिविधियों में संलग्न होने, नए कौशल हासिल करने और बच्चों की शिक्षा में सहायता करने का समय मिल जाता है।
- **ग्राम समितियाँ:** 5.27 लाख से अधिक ग्रामीण जल एवं स्वच्छता समितियों (वीडब्ल्यूएससी)/पानी समितियों का गठन किया गया है, और 5.12 लाख ग्राम कार्य योजनाएं (वीएपी) तैयार की गई हैं, जो जल स्रोत संवर्धन, जल आपूर्ति प्रणालियाँ, गंदे पानी के उपचार और पुनः उपयोग सहित गांव में नियमित रखरखाव पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
- **संदूषण उन्मूलन:** प्रदूषण की समस्या का समाधान के रूप में, सुरक्षित पेयजल अब सभी आसैनिक और फ्लोराइड प्रभावित बस्तियों में उपलब्ध है।
- **जल परीक्षण:** स्रोत और वितरण बिंदुओं पर पानी के नमूनों का नियमित परीक्षण गुणवत्तापूर्ण पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करता है।
- **मान्यता:** कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने "नागरिक-केंद्रित सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए उभरती प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग" श्रेणी में मिशन को रजत पुरस्कार से सम्मानित किया है।
- **एसडीजी 6 की ओर:** जल जीवन मिशन; सभी को सुरक्षित और किफायती पानी उपलब्ध कराने, ग्रामीण क्षेत्रों में घरों, स्कूलों, आंगनवाड़ियों और अन्य सार्वजनिक संस्थानों के लिए नल के माध्यम से सुरक्षित पानी तक पहुंच सुनिश्चित करने की दिशा में काम करके सतत विकास लक्ष्य 6 (एसडीजी 6) के अनुरूप है।

वैकल्पिक रूप से सक्रिय नम्य जैव-निम्नीकरणीय पॉलिमर-नैनोसामग्री आधारित (Biodegradable Polymer-Nanocomposite) फिल्म/परत

सन्दर्भ: IASST गुवाहाटी के शोधकर्ताओं ने मजबूत यांत्रिक गुणों और ऑप्टिकल गतिविधि के साथ एक बायोडिग्रेडेबल नैनोकम्पोजिट फिल्म (परत) बनाई है।

- IASST गुवाहाटी के शोधकर्ताओं ने लचीले डिस्प्ले और ऑप्टिकल एलईडी के लिए मजबूत यांत्रिक गुणों वाली एक ऑप्टिकली सक्रिय, बायोडिग्रेडेबल नैनोकम्पोजिट फिल्म विकसित की है।
- पॉलीविनाइल अल्कोहल (पीवीए), एक अच्छी तरह से अध्ययन किया गया बायोडिग्रेडेबल पॉलिमर है, जिसका उपयोग नैनोमेटेरियल्स के साथ किया गया है।
- इस फिल्म को कॉपर क्लोराइड लेडिंग के साथ एक सरल समाधान कास्टिंग विधि के माध्यम से बनाया गया था, जिससे इन-सिटू CuO नैनोकणों का निर्माण हुआ।
- विभिन्न स्पेक्ट्रोस्कोपिक और सूक्ष्मदर्शी तकनीकों ने पॉलिमर के भीतर CuO नैनोकण के गठन की पुष्टि की है।
- नैनोकम्पोजिट फिल्म ने कॉपर क्लोराइड के साथ उल्लेखनीय यांत्रिक शक्ति (39 एमपीए तक) और लचीलापन (169%) प्रदर्शित किया।

पॉलिमर

- पॉलिमर कई उप इकाइयों से बने बड़े अणु होते हैं, "पॉलिमर" शब्द की उत्पत्ति "कई भागों" के लिए ग्रीक शब्द से हुई है।
- पॉलिमर प्रकृति में मौजूद होते हैं (प्राकृतिक पॉलिमर, जैसे जीवित जीवों में डीएनए) या मनुष्यों द्वारा बनाए जा सकते हैं (सिंथेटिक पॉलिमर, जैसे प्लास्टिक)।
- पॉलिमर में विशिष्ट भौतिक और रासायनिक गुण होते हैं, जिससे उन्हें विभिन्न रोजमर्रा के अनुप्रयोगों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

भौतिक गुण:

- लंबाई बढ़ाने और क्रॉस-लिंकिंग से पॉलिमर की तन्यता क्षमता बढ़ती है।
- पॉलिमर पिघलने के बजाय क्रिस्टलीय से अर्ध-क्रिस्टलीय कणों में परिवर्तित हो जाते हैं।

रासायनिक गुण:

- पॉलिमर हाइड्रोजन और आयनिक बंधन से प्रभावित होते हैं, जो विभिन्न पार्श्व समूहों वाले पारंपरिक अणुओं की तुलना में मजबूत क्रॉस-लिंकिंग प्रदान करते हैं।
- इसका द्विध्रुवीय बंधन इसे उच्च लचीलापन प्रदान करता है।





- जुड़ी हुई श्रृंखलाओं के बीच वैन डेर वाल्स (Van der Waals) बलों के परिणामस्वरूप बंधन कमजोर और कुछ पॉलिमर का गलनांक कम हो जाता है।

ऑप्टिकल गुण:

- पीएमएमए और एचईएमए जैसे पॉलिमर तापमान के साथ अपवर्तक सूचकांक में परिवर्तन प्रदर्शित करते हैं, जिससे वे स्पेक्ट्रोस्कोपी और विश्लेषणात्मक अनुप्रयोगों के लिए लेजर में उपयोगी हो जाते हैं।

पॉलिमर और उनके मोनोमर्स (Monomers) :

- **पॉली प्रोपीन (Polypropene):** पॉलीप्रोपाइलीन में प्रोपेन मोनोमर्स शामिल हैं।
- **पॉलीस्टाइरीन (Polystyrene):** एक पारदर्शी सुगंधित बहुलक, जो स्टाइरीन मोनोमर्स से बना है।
- **पॉलीविनाइल क्लोराइड (पीवीसी):** विनाइल क्लोराइड मोनोमर्स से बना एक प्लास्टिक पॉलिमर है।
- **यूरिया-फॉर्मिलिडहाइड रेजिन:** एक गैर-पारदर्शी प्लास्टिक, जो फॉर्मिलिडहाइड और यूरिया को गर्म करने से बनता है।
- **ग्लाइप्टल (Glyptal):** इसमें एथिलीन ग्लाइकोल और फ्रेथलिक एसिड मोनोमर्स होते हैं।
- **बैकेलाइट (polyoxybenzylmethyleneglycolanhydride):** यह फिनोल और एलिडहाइड मोनोमर्स से बना एक प्लास्टिक है।

भारत के नामों का इतिहास

संदर्भ: भारत के नामों को लेकर एक राजनीतिक विवाद तब उभरा जब सरकार ने जी 20 शिखर सम्मेलन के रात्रिभोज का आमंत्रण "भारत के राष्ट्रपति" के बजाय "इंडिया के राष्ट्रपति" को भेजा।

- **प्राचीन काल - भारत, भरत, भारतवर्ष:** "भारत", "भरत" या "भारतवर्ष" नाम की जड़ें पौराणिक साहित्य और महाभारत महाकाव्य में पाई जा सकती हैं। यह भूमि को दक्षिण में समुद्र और उत्तर में बर्फ के निवास के बीच के क्षेत्र के रूप में वर्णित करता है।
- **सैन्धव प्रदेश:** प्राचीन काल में, जिस क्षेत्र को अब भारत के नाम से जाना जाता है, उसे सिंधु नदी से जुड़े होने के कारण कभी-कभी "सैन्धव प्रदेश" भी कहा जाता था।
- **अधिक्षेत्रीय और उपमहाद्वीपीय क्षेत्र:** सामाजिक वैज्ञानिक कैथरीन क्लेमेंटिन-ओझा ने इस बात पर जोर दिया कि "भारत" एक राजनीतिक या भौगोलिक इकाई के बजाय एक धार्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक इकाई को संदर्भित करता है। यह उस क्षेत्र का प्रतीक है जहां समाज की ब्राह्मणवादी व्यवस्था प्रचलित है।
- **प्राचीन राजा भरत:** "भारत" एक प्राचीन पौराणिक राजा भरत से भी जुड़ा है जो भारत और उपमहाद्वीप के सभी लोगों के ऋग्वैदिक जनजाति का पूर्वज।
- **"हिन्दुस्तान" का परिचय:** माना जाता है कि "हिन्दुस्तान" शब्द की उत्पत्ति "हिंदू" से हुई है, जो संस्कृत के "सिंधु" (सिंधु) का फारसी रूप है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास अचमेनिड फ़ारसी (Achaemenid Persian) द्वारा सिंधु घाटी पर विजय के दौरान प्रसिद्ध हुआ।
- **"भारत" में लिप्यंतरण:** यूनानियों ने "हिन्द" का अनुवाद "सिंधु" किया। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सिकंदर महान के भारत पर आक्रमण के समय तक, "भारत" सिंधु के पार के क्षेत्र से जुड़ गया।
- **"हिन्दुस्तान" का प्रयोग एवं विस्तार:** 16वीं शताब्दी में प्रारंभिक मुगल काल के दौरान, "हिन्दुस्तान" का तात्पर्य संपूर्ण सिंधु-गंगा के मैदान से था। यह प्रयोग 18वीं शताब्दी के मध्य से अंत तक जारी रहा और यहां तक कि मुगल सम्राट के क्षेत्रों तक भी फैल गया।
- **"भारत" में संक्रमण:** 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ब्रिटिश मानचित्रों ने "भारत" नाम अपनाया। "हिन्दुस्तान" का पूरे दक्षिण एशिया से जुड़ाव खत्म होने लगा और "इंडिया" प्रचलित शब्द बन गया।
- **संविधान में शामिल करना:** संविधान में भारत के लिए नाम तय करते समय, "हिन्दुस्तान" हटा दिया गया, और "भारत" और "इंडिया" दोनों को बरकरार रखा गया। 1949 में संविधान सभा की बहस के दौरान, नाम को लेकर सदस्यों के बीच मतभेद था, जिसमें कुछ लोगों ने "भारत को विदेशों में भी इंडिया के नाम से जाना जाता है" जैसे विकल्प सुझाए थे।
- **संवैधानिक नामकरण:** भारतीय संविधान के पहले अनुच्छेद में लिखा है, "भारत, जो कि भारत है, राज्यों का एक संघ होगा," दोहरे नामकरण को दर्शाता है।

अंग्रेजी नाम "इंडिया" का विकास

- **हेरोडोटस और बीजान्टिन (प्राचीन काल):** बीजान्टिन ने सिंधु नदी के पार के क्षेत्र के लिए 'भारत' का इस्तेमाल किया, यह प्रयोग हेरोडोटस के कार्यों से प्रभावित था।
- **किंग अल्फ्रेड का अनुवाद (9वीं शताब्दी):** अंग्रेजी नाम 'इंडिया' लैटिन से लिया गया है और किंग अल्फ्रेड के पुरानी अंग्रेजी में ओरोसियस के अनुवाद में दिखाई दिया। हालांकि, फ्रांसीसी प्रभाव के कारण इसे 'यंडे' या 'इंडे' से बदल दिया गया।
- **'इंडिया' का पुनरुत्पादन (उत्तरार्धिक आधुनिक अंग्रेजी, 15वीं शताब्दी से 1650 ई. तक):** लैटिन, स्पेनिश या पुर्तगाली से प्रभावित होकर अंग्रेजी भाषा में 'इंडिया' फिर से उभरा। इस अवधि के दौरान इसे पुनः प्रस्तुत किया गया।
- **किंग जेम्स बाइबिल और शेक्सपियर (लेट अर्ली मॉडर्न इंग्लिश):** परिणामस्वरूप, 'इंडिया' शब्द किंग जेम्स बाइबिल के पहले संस्करण और इस युग के प्रसिद्ध नाटककार विलियम शेक्सपियर के कार्यों में दिखाई दिया।

यूपीआई क्यूआर कोड-सीबीडीसी इंटरऑपरेबिलिटी

संदर्भ: भारतीय स्टेट बैंक और बैंक ऑफ बाइदा जैसे कुछ बैंकों ने अपने डिजिटल रुपया ऐप के भीतर यूपीआई इंटरऑपरेबिलिटी (अंतरसंचालनीयता) लागू की है।

- बैंकों ने यूनिकाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) क्विक रिस्पांस (QR) कोड और उनके केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC) या e₹ अनुप्रयोगों के बीच इंटरऑपरेबिलिटी (अंतरसंचालनीयता) को सक्षम किया है।
- इस एकीकरण से खुदरा डिजिटल रुपया (e₹-R) के उपयोगकर्ताओं को लाभ होगा क्योंकि वे अब दुकानों पर किसी भी UPI QR कोड को स्कैन करके लेनदेन कर सकते हैं।
- इसके अतिरिक्त, व्यापारी अपने मौजूदा यूपीआई क्यूआर कोड के माध्यम से डिजिटल रुपया भुगतान स्वीकार कर सकते हैं।
- यह पहल खुदरा डिजिटल रुपये (e₹-R) को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के नेतृत्व में चल रहे पायलट प्रोजेक्ट का हिस्सा है।

Face to Face Centres





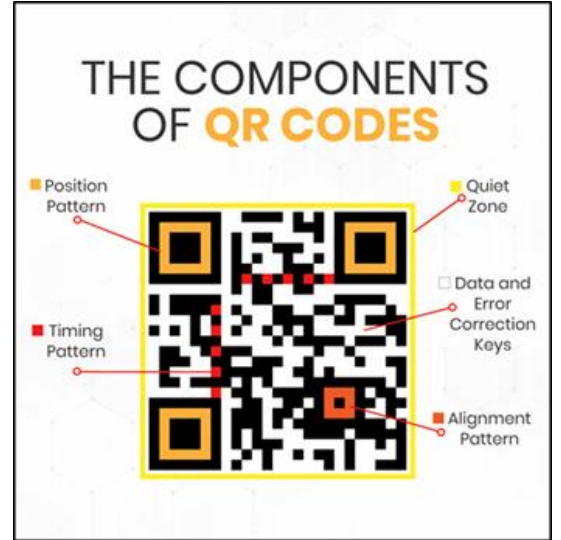
यूपीआई और डिजिटल रुपए की इंटरऑपरेबिलिटी (अंतरसंचालनीयता)

प्रारंभ में, खुदरा डिजिटल रुपया (e₹-R) के उपयोगकर्ताओं को लेनदेन के लिए विशिष्ट QR कोड स्कैन करना पड़ता था।

- इंटरऑपरेबिलिटी का मतलब है कि सभी यूपीआई क्यूआर कोड अब सीबीडीसी ऐप्स के साथ संगत हैं।
- यह भुगतान को सरल बनाता है क्योंकि उपयोगकर्ता लेनदेन के लिए एकल क्यूआर कोड का उपयोग कर सकते हैं।

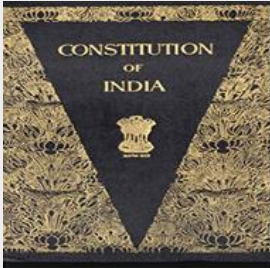
सेंट्रल बैंक डिजिटल मुद्रा

- डिजिटल रुपया (e₹), जिसे eINR या E-Rupee के नाम से भी जाना जाता है, यह भारतीय रुपये का एक टोकनयुक्त डिजिटल संस्करण है।
- इसे भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC) के रूप में जारी किया जाता है।
- डिजिटल रुपये की अवधारणा जनवरी 2017 में प्रस्तावित की गई थी, और इसे आधिकारिक तौर पर 1 दिसंबर, 2022 को लॉन्च किया गया था।
- डिजिटल रुपया ब्लॉकचेन डिस्ट्रीब्यूटेड-लेजर तकनीक का उपयोग करता है।
- भौतिक बैंक नोटों के समान, डिजिटल रुपये की प्रत्येक इकाई केंद्रीय बैंक द्वारा विशिष्ट रूप से विनियमित होती है, जिसका दायित्व आरबीआई वहन करता है।
- इसे ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से पहुंच योग्य बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **RBI ने इसे दो रूपों में प्रस्तुत किया है** : थोक के लिए डिजिटल रुपया (e₹-W), मुख्य रूप से वित्तीय संस्थानों के लिए अंतरबैंक निपटान की सुविधा के लिए, और खुदरा के लिए डिजिटल रुपया (e₹-R), जो उपभोक्ता और व्यावसायिक लेनदेन को पूरा करता है।
- डिजिटल रुपए को लागू करने का एक प्रमुख उद्देश्य भौतिक मुद्रा से जुड़ी सुरक्षा व मुद्रण लागत को समाप्त करना है। ये लागत आम जनता, व्यवसायों, बैंकों और आरबीआई द्वारा साझा की जाती है, जो कि ₹49,848,000,000 (लगभग 5000 करोड़) है।



NEWS IN BETWEEN THE LINES

अनुच्छेद 1



हाल ही में, भारतीय संविधान का अनुच्छेद 1, जो "इंडिया, अर्थात् भारत, राज्यों का एक संघ होगा" वाक्यांश से शुरू होती है, समाचारों में है।

अनुच्छेद 1 क्या है?

- अनुच्छेद 1 भारतीय संविधान के भीतर एक विशिष्ट प्रावधान है, और यह "संघ का नाम और क्षेत्र" से संबंधित है।
- "भारत, अर्थात् इंडिया, राज्यों का एक संघ होगा।" इसका मतलब यह है कि देश का आधिकारिक नाम 'इंडिया' है और संविधान में भी इसे 'भारत' ही कहा गया है।

दोहरे नाम - इंडिया और भारत:

- अनुच्छेद 1 अद्वितीय है क्योंकि यह राष्ट्र को संदर्भित करने के लिए 'इंडिया' और 'भारत' दोनों का उपयोग करता है। यह दोहरा नामकरण भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विविधता को दर्शाता है।

ऐतिहासिक महत्व:

- अनुच्छेद 1 को भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने की प्रक्रिया के दौरान, विशेष रूप से 18 सितंबर, 1949 को अपनाया गया था। मसौदा समिति के अध्यक्ष डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने इसके निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

के बारे में:

- गिल्बर्ट हिल अंधेरी, मुंबई में स्थित काली बेसाल्ट चट्टान का 200 फुट का एकाश्रम स्तंभ है।
- महाराष्ट्र सरकार ने हाल ही में इसे दुबई के बुर्ज खलीफा के समान एक पर्यटक आकर्षण के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया है।
- इस चट्टान का निर्माण लगभग 66 मिलियन वर्ष पहले मेसोजोइक युग में, ज्वालामुखीय गतिविधि की अवधि के दौरान हुआ था।
- इसका निर्माण तब हुआ जब पिघला हुआ लावा पृथ्वी की दरारों से निकला और अद्वितीय एकाश्रम संरचना में जम गया।
- गिल्बर्ट हिल को इसके भूवैज्ञानिक और पारिस्थितिक महत्व को उजागर करते हुए 1952 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।
- 2007 में, वृहद् मुंबई नगर निगम ने इसे ग्रेड II विरासत संरचना के रूप में नामित किया।

मेसोजोइक युग:

- पृथ्वी के इतिहास में मेसोजोइक युग लगभग 252 मिलियन वर्ष पूर्व से 66 मिलियन वर्ष पूर्व तक चला।
- इस युग को अक्सर "डायनासोर का युग" कहा जाता है क्योंकि इस समय के दौरान डायनासोर प्रमुख जानवर थे।
- इनके बड़े पैमाने पर विलुप्त होने की घटना, क्रेटेशियस-पेलोजेन (के-पीजी) के साथ समाप्त हुई, जिससे गैर-एवियन डायनासोर और कई अन्य प्रजातियां विलुप्त हो गईं।

गिल्बर्ट हिल



Face to Face Centres





कुरुवई धान



कुरुवई धान क्या है?

- कुरुवई धान अल्पकालिक धान की खेती को संदर्भित करता है, जो मुख्य रूप से तमिलनाडु के नदी डेल्टा में उगाया जाता है।
- इसकी खेती प्रायः जून से सितंबर की अवधि के दौरान की जाती है।
- इसकी खेती तंजावुर, तिरुवरुर और नागपट्टिनम सहित तमिलनाडु के कई डेल्टा जिलों में प्रमुखता से की जाती है।

पानी पर निर्भरता: कुरुवई फसलों को सिंचाई के लिए काफी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है।

मेडूर बांध:

- तमिलनाडु के किसान कुरुवई की खेती के लिए मेडूर बांध के पानी पर निर्भर हैं, जो सेलम (तमिलनाडु) में कावेरी नदी पर स्थित है।

कर्नाटक की भूमिका:

- तमिलनाडु में मेडूर बांध के लिए कर्नाटक द्वारा मासिक पानी छोड़ना कुरुवई फसलों के लिए पर्याप्त पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रवासन और रोजगार:

- पानी की कमी के कारण कुरुवई फसल की विफलता के समय, कई किसान रोजगार की तलाश में शहरी क्षेत्रों में पलायन करने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जिससे ग्रामीण-शहरी प्रवास की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

जीलैंडिया



जीलैंडिया क्या है?

दक्षिण प्रशांत महासागर में स्थित एक महाद्वीप है, इस **भौगोलिक संरचना को** लगभग 375 वर्षों तक नजरअंदाज किए जाने के बाद हाल ही में भूवैज्ञानिकों द्वारा इसे आठवें महाद्वीप के रूप में मान्यता प्रदान कर दी गई है।

भौगोलिक स्थान:

- यह दक्षिण-पश्चिमी प्रशांत महासागर में, ऑस्ट्रेलिया के पूर्व में और न्यू कैलेडोनिया के दक्षिण में स्थित है।

भूवैज्ञानिक उत्पत्ति:

- यह 500 मिलियन वर्ष पहले एक बार प्राचीन महाद्वीप गोंडवाना का हिस्सा था।
- लगभग 105 मिलियन वर्ष पहले गोंडवाना से अलग होना शुरू हुआ।
- जीलैंडिया का 94% से अधिक भाग पानी के अंदर है।

आकार और स्थलाकृति:

- इसका क्षेत्रफल लगभग 1.89 मिलियन वर्ग मील (4.9 मिलियन वर्ग किमी) है, जो ऑस्ट्रेलिया के आकार का लगभग आधा है।
- अधिकतर जलमग्न हैं, पानी के ऊपर का हिस्सा न्यूजीलैंड के उत्तरी और दक्षिणी द्वीपों और न्यू कैलेडोनिया का निर्माण करता है।

टेक्टोनिक प्लेट सीमाएँ:

- जीलैंडिया ऑस्ट्रेलियाई प्लेट, प्रशांत प्लेट और इंडो-ऑस्ट्रेलियाई प्लेट सहित प्रमुख टेक्टोनिक प्लेटों की सीमाओं पर स्थित है।

हाबिल तस्मान की खोज:

- पहली बार डच नाविक एबेल तस्मान द्वारा 1642 में "महान दक्षिणी महाद्वीप" की खोज के दौरान इसकी उपस्थिति को रिकॉर्ड किया गया था।

अफ्रीका जलवायु शिखर सम्मेलन 2023



हाल ही में, अफ्रीका जलवायु शिखर सम्मेलन 2023 (ACW23) 4 सितंबर, 2023 को नैरोबी, केन्या में आयोजित हुआ।

वैश्विक जलवायु कार्यवाई:

- राष्ट्रपति रूतो ने अफ्रीका में अल्प कार्बन उत्सर्जन के बावजूद जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने की तात्कालिकता पर बल दिया।
- उन्होंने ग्लोबल नॉर्थ बनाम ग्लोबल साउथ या विकसित बनाम विकासशील देशों के बारे में बहस पर कार्यवाई का आग्रह किया।

युवा और कार्यबल क्षमता:

- 2050 तक, वैश्विक कार्यबल का 25% से अधिक और 2100 तक लगभग 40% अफ्रीका में होगा।

नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता:

- पवन, सौर और पनबिजली सहित अफ्रीका के विशाल नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन, महाद्वीप को ऊर्जा में आत्मनिर्भर बना सकते हैं।
- 2050 तक नेट-शून्य लक्ष्य प्राप्त करने में अन्य देशों का समर्थन करने का अवसर।

केन्या की नवीकरणीय प्रगति:

- नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में केन्या की उपलब्धियाँ, 2030 तक 100% नवीकरणीय ऊर्जा और 2040 तक 100 गीगावाट पूरी तरह से नवीकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य।

शिखर सम्मेलन का विषय और महत्व:

- **थीम:** "अफ्रीका और विश्व के लिए हरित विकास और जलवायु वित्त समाधान को आगे बढ़ाना।"
- जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन के तहत COP28 तक पहुंचने वाली अफ्रीकी सर्वसम्मति और कार्यवाई के लिए महत्वपूर्ण परिणाम।





समाचारों में स्थान

तुर्की-रूस काला सागर अनाज समझौता

हाल ही में तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगन ने रूस के साथ काला सागर अनाज समझौते के पुनरुद्धार पर विश्वास व्यक्त किया। रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने समझौते की बहाली को रूसी कृषि निर्यात के संबंध में पश्चिमी दायित्वों से जोड़ा।

तुर्की-रूस काला सागर अनाज समझौता क्या है?

- तुर्की-रूस काला सागर अनाज सौदा 2022 में हस्ताक्षरित एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है, जिसका मुख्य उद्देश्य काला सागर के माध्यम से यूक्रेन से अनाज ले जाने वाले मालवाहक जहाजों का सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित करना है।
- इस समझौते ने जहाजों को ओडेसा, चोर्नोमोर्स्क और पिवडेनी (युजनी) सहित काला सागर में यूक्रेनी बंदरगाहों से अनाज परिवहन करने की अनुमति दी, बशर्ते कि वे यह सुनिश्चित करने के लिए निरीक्षण पास कर लें कि वे हथियार या निषिद्ध माल नहीं ले जा रहे हैं।

समझौते का इतिहास:

- काला सागर में यूक्रेन से अनाज ले जाने वाले जहाजों के लिए सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित करने के लिए 2022 में काला सागर अनाज समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- इसका उद्देश्य यूक्रेन के आयात पर अत्यधिक निर्भर अफ्रीका और मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में खाद्य संकट को रोकना था।
- रूस ने शुरू में जुलाई में समझौते का विस्तार करने से इनकार कर दिया था।

यूक्रेन का महत्व:

- यूक्रेन गेहूँ और मक्का जैसे खाद्यान्न का एक प्रमुख वैश्विक निर्यातक है।
- यह संयुक्त राष्ट्र के खाद्य सहायता कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

काला सागर अनाज पहल:

- इसे 22 जुलाई, 2022 को संयुक्त राष्ट्र और तुर्की द्वारा शुरू किया गया।
- काला सागर में तीन यूक्रेनी बंदरगाहों (ओडेसा, चोर्नोमोर्स्क, पिवडेनी) के बीच मालवाहक जहाजों को यात्रा करने की अनुमति दी गई।



POINTS TO PONDER

- ❖ किस भारतीय ने 2023 का रेमन मैग्सेसे पुरस्कार जीता है? - रवि कन्नन
- ❖ भारत के रेलवे बोर्ड की प्रमुख बनने वाली पहली महिला कौन है? - जया वर्मा सिन्हा
- ❖ चालू वित्त वर्ष (2023-2024) की अप्रैल-जून तिमाही में भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) प्रतिशत क्या है? - 7.8%
- ❖ कौन सा देश अपने संविधान में देश के मूल निवासियों को मान्यता देने के लिए जनमत संग्रह कराने जा रहा है? - ऑस्ट्रेलिया
- ❖ अगस्त में UPI लेनदेन की संख्या ने कितना लक्ष्य प्राप्त किया? - दस खरब (10 billion)

Face to Face Centres

